storyweaver Community

सुनैना देवी - एक मधुबनी आर्टिस्ट की कहानी

Author: Vibha Lohani
Illustrator: Vibha Lohani
Translator: Arvind Gupta

पठन स्तर ४

भारत में महिलाओं ने बॅंकिंग, विज्ञान आदि कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया है.

पर कुछ अन्य महिलाएं भी सफलता के शिखर पर पहुंची हैं. उन्हें उच्च शिक्षा का मौका न मिला हो, पर उन्होने अपने हुनर और कड़ी मेहनत से दुनिया पर अपनी छाप छोड़ी है. आइए सुनैना देवी से मिलें, जो बिहार में मधुबनी कला की एक पुरिस्कृत आर्टिस्ट हैं.

सुनैना देवी का जन्म 28 जुलाई, 1951 को भारत-नेपाल सीमा पर स्थित दुहाबी गाँव में हुआ था. यह इलाका प्राचीन मिथिला क्षेत्र में पड़ता है और यहाँ पर नेपाल सीमा पार के लोगों में शादी और खून का एक पुराना रिश्ता है.

युवा सुनैना का विवाह 1966 में, बिहार के मधुबनी जिले में स्थित ग्राम जितवारपुर के श्री गणेश झा से हुआ था. हालाँकि, उसे स्कूल जाने का मौका नहीं मिला, लेकिन शादी के बाद उसे मधुबनी कला सीखने का मौका ज़रूर मिला.

शुरू में उसने पेंटिंग बनाने में अपनी सास की सहायता की. लेकिन जब युवा सुनैना ने कला में प्रतिभा और समझ दिखाई, तो ससुराल वालों और पति ने उसे आगे सीखने के लिए प्रोत्साहित किया.

सुनैना ने मधुबनी कला की विभिन्न शैलियों जैसे भरनी, कच्छी, तांत्रिक, गोदना और कोहबर के बारे में सीखा.

जब उनके बच्चे मुश्किल से 3 - 4 साल के थे, तो सुनैना देवी ने अपने पति को खो दिया. लेकिन उन्होंने उम्मीद नहीं खोई और वो अपने परिवार के बाकी लोगों के साथ पेंटिंग बनाकर जीविकोपार्जन करने लगीं.

शुरुआती दिनों में, वो व्यापारियों पर निर्भर थीं, जो चित्रों को बेचने के लिए उन्हें विभिन्न स्थानों पर ले जाते थे. लेकिन उससे उन्हें कोई स्थिर आय नहीं थी. व्यापारी पेंटिंग लेकर चले जाते थे और फिर महीनों बाद ही लौटते थे, और कभी-कभी बहुत कम भुगतान करते थे.

जल्द ही सुनैना एक ऐसे केंद्र में शामिल हो गईं जो मधुबनी के अन्य कलाकारों का एक समूह था. वहाँ उन्होंने कमाई के लिए कलाकृति बनाईं. इससे उनकी मासिक आय सुनिश्चित हुई, जो घर चलाने के लिए उन्हें चाहिए थी. हर दिन वो जितवापुर से मधुबनी तक की यात्रा करती थीं.

सुनैना की प्रतिभा देखकर, केंद्र के प्रबंधकों ने उन्हें अपना काम प्रदर्शित करने और बेहतर कमाई के लिए विभिन्न स्थानों की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया. उन्होंने सुनैना देवी को उनका नाम भी लिखना सिखाया.

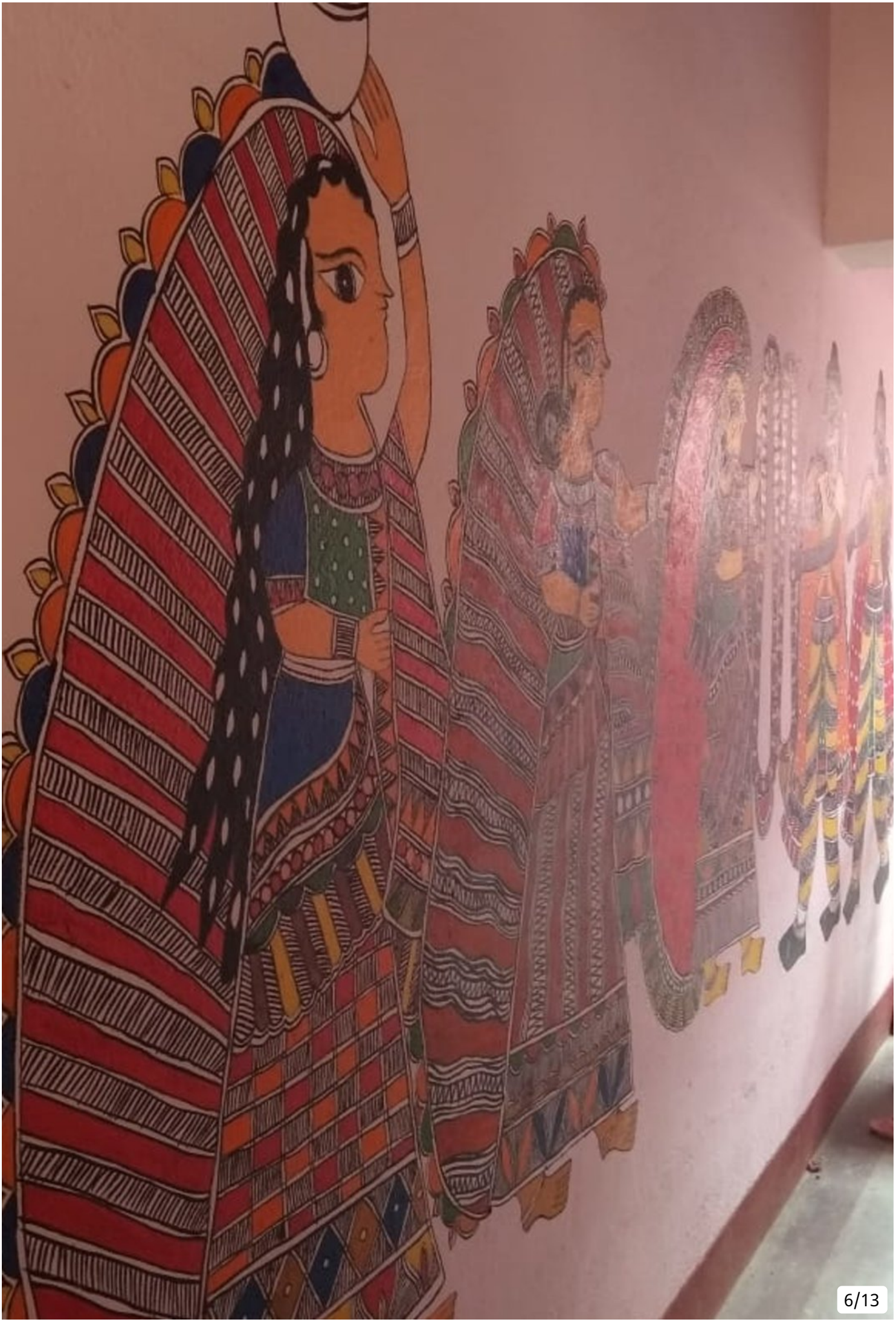

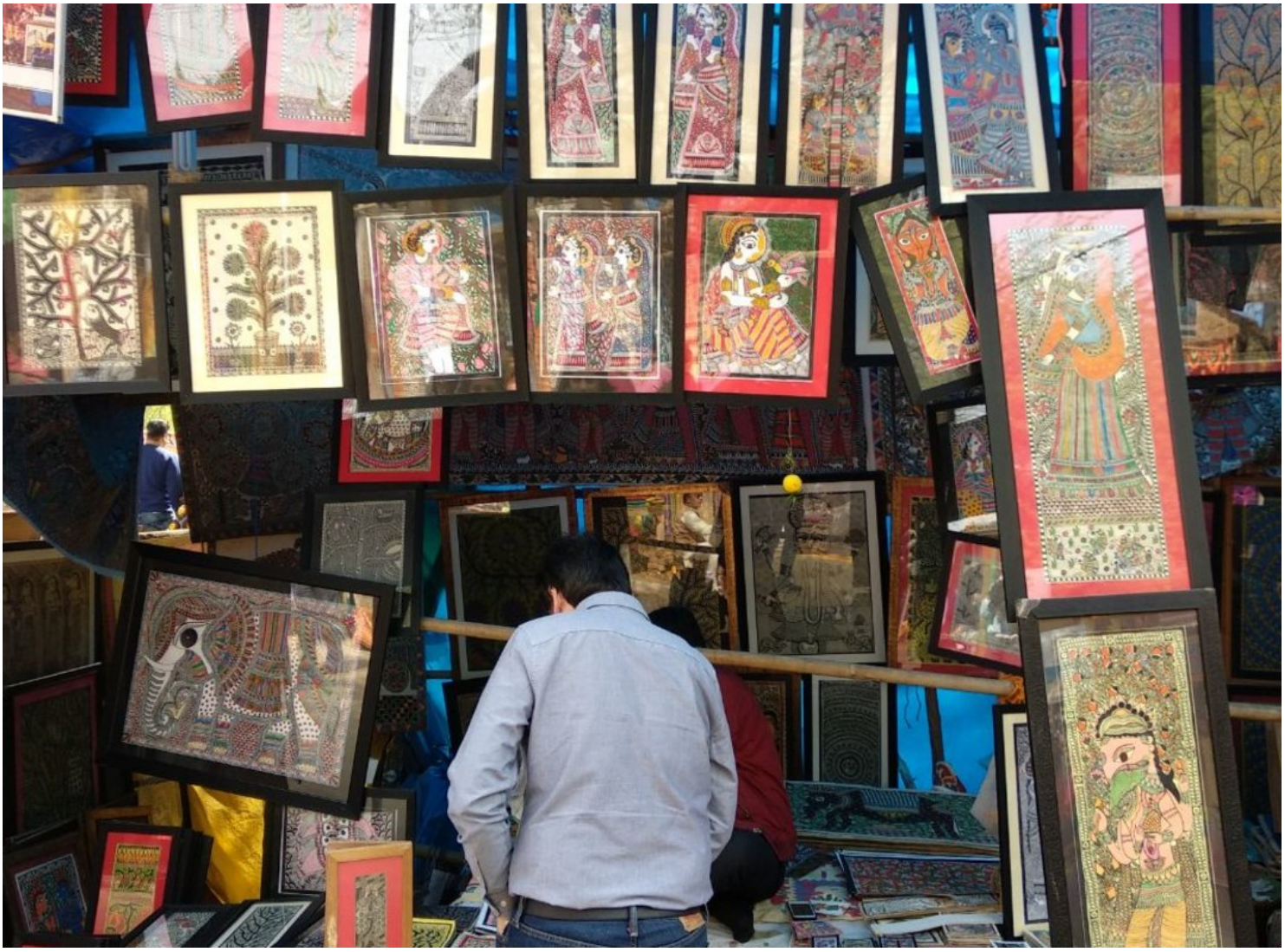

सुनैना ने अन्य कलाकारों के साथ बैंगलोर, दिल्ली, मुंबई जैसे शहरों की यात्रा की जहाँ उन्होंने होटलों, कार्यालयों या यहाँ तक कि अमीर बंगलों के मालिकों के लिए बड़ी मात्रा में पेंटिंग बनाईं.

सुनैना ने मुख्य रूप से मधुबनी की कच्छी और भरनी शैलियों का अभ्यास किया.

लगभग 40 वर्षों में, सुनैना देवी ने मधुबनी पेंटिंग्स की पहचान को उभरते हुए देखा और उनके चित्रों को देश भर

उनकी कड़ी मेहनत और प्रतिभा को पहचान मिली और वर्ष 2013-14 में, सुनैना देवी को बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री -
श्री नीतीश कुमार द्वारा उनकी पेंटिंग के लिए राज्य पुरस्कार मिला.

(पृष्ठ -9 पर प्राप्त पुरस्कार का चित्र)

राज्य पुरस्कार
2013-14
को
मधुबनी पेंटिंग
में श्रेष्ठ प्रतिभा के लिये
राज्य पुरस्कार से पुरस्कृत
किया जाता है ।

वर्तमान में सुनैना देवी अपने परिवार के साथ गाँव में रहती हैं. वो एक दादी के रूप में जीवन का आनंद ले रही हैं और अपनी बहू और बच्चों को यह पारंपरिक कला भी सिखा रही हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे उनके ससुराल वालों ने उन्हें कभी सिखाई थी.

वो अपने नियमित जीवन के बीच में अभी भी फुरसत मिलने पर पेंट करती हैं.

उनकी बेटी मीरा का कहना है कि सुनैना देवी आमतौर पर अब कला की भरनी शैली पर काम करती हैं, क्योंकि कच्छी एक महीन काम है और बुढ़ापे से उनकी आंखों की रोशनी कम हुई है.

उनके बेटे, मनीष झा और बेटी मीरा दोनों ने अपनी माँ से मधुबनी कला सीखी है. वर्तमान में मनीष मधुबनी चित्रों के व्यापार का काम करते हैं और देश भर में विभिन्न प्रदर्शनियों और हस्तशिल्प मेलों में भाग लेते हैं.

(पेज 11 पर पुरस्कार जीतने वाली पेंटिंग)

मधुबनी कला के बारे में तथ्य

1) मधुबनी, जिसे मिथिला पेंटिंग भी कहा जाता है, मिथिला क्षेत्र से आती हैं. यह इलाका भारत-नेपाल सीमा के दोनों ओर है. भारत में
यह क्षेत्र बिहार राज्य में स्थित है.

2) इसकी उत्पत्ति रामायण काल में हुई, जब भगवान राम ने मिथिला की राजकुमारी सीता से शादी की.

3) ये पेंटिंग विभिन्न अवसरों को दर्शाती हैं और मूल रूप से मधुबनी क्षेत्र की महिलाओं द्वारा ही बनाई जाती हैं.

4) मधुबनी पेंटिंग्स प्रकृति और पौराणिक कथाओं से प्रेरित हैं और प्रतीकात्मक बिंबों जैसे कमल, कल्पवृक्ष, मोर, सूर्य आदि का उपयोग करती हैं.

5) इस्तेमाल किए जाने वाले रंग पारंपरिक रंग और पिगमेंट हैं,
और टहनियाँ, उंगलियाँ, ब्रश या माचिस की तीली हैं.

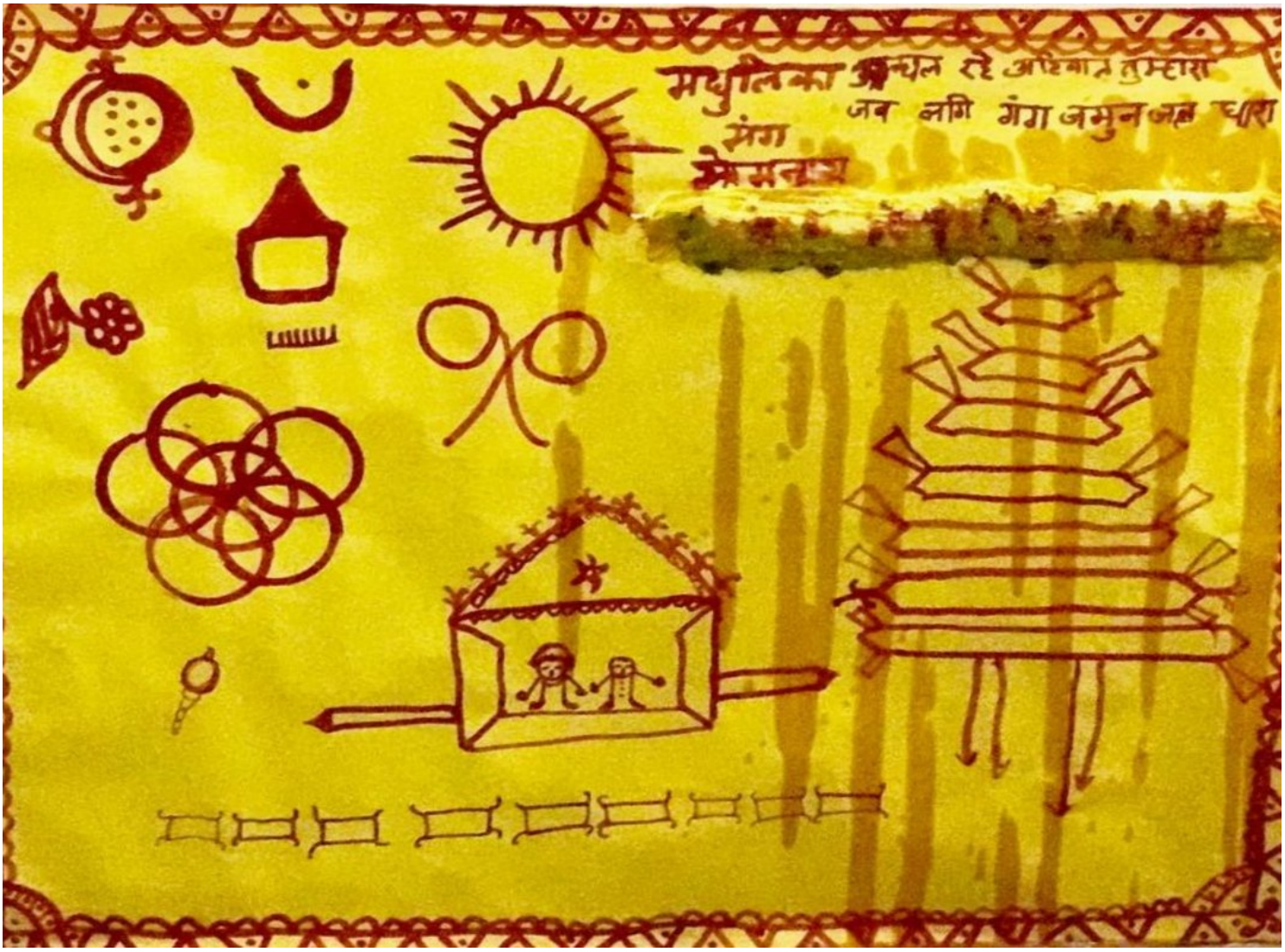

6) मधुबनी की कोहबर शैली, पूरे बिहार में लोकप्रिय है और विशेष रूप से परिवार में शादियों के दौरान घरों में बनाई जाती है.

(बिहार में शादियों के दौरान बनाई गई कोहबर आर्ट का चित्र)

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: सुनैना देवी - एक मधुबनी आर्टिस्ट की कहानी is translated by Arvind Gupta . The © for this translation lies with Arvind Gupta, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Sunena Devi - Story of a Madhubani Artist', by Vibha Lohani . © Vibha Lohani , 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: Sunena Devi2, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Sunena Devi, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Madhubani painting, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: bride in madhubani, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Madhubani Trader, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Durga in Madhubani, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: madhubani award, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: Award Winning painting , by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Kohbar, by Vibha Lohani © Vibha Lohani, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सुनैना देवी - एक मधुबनी आर्टिस्ट की कहानी

(Hindi)

मधुबनी एक परंपरागत कला है जिसे मुख्यरूप से बिहार के मधुबनी ज़िले की महिलाएं ही बनाती हैं. उनमें से कुछ आर्टिस्ट महिलाओं ने बहुत सुंदर काम किया है और उनके काम को पूरे भारत के लोगों ने सराहा है. भारत सरकार ने भी उन्हें पुरिस्कृत किया है. ऐसी ही एक पुरिस्कृत मधुबनी आर्टिस्ट सुनैना देवी से मिलें.

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!